रात्रि क्लास 1-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे जानते हैं डायरी की सिस्टम चल रही है इसको कहेंगे परम्परा। 5000 वर्ष बाद इन ल0ना0 का राज्य होगा। कितनी डायरी (दहेज) मिलेंगी। जितना जिसके पास धन है इतनी डायरी (दहेज) मिलती हैं। वहां तो दासियां आदि भी मिलती हैं। सतयुग किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। समझते हैं यह स्वर्ग के मालिक हैं तो भी यह पता नहीं है स्वर्ग कब था, कौन वहां रहते थे। तुम बच्चे कुछ भी नहीं जानते थे। यह खेल फेल करते हो। पढ़ाई में भी पूरा अटेन्शन देना चाहिए। एक तो है पढ़ाई की सब्जेक्ट और याद की यात्रा। यही घड़ी2 भूल जाते हैं। दादा से पूछ सकते हो आप के तो बाजु में बैठे हैं। यह कहते हैं जितना नजदीक है उतना और ही मुश्किल है। बाप समझाते हैं कर्मातीत अवस्था होनी है याद की यात्रा से। अभी नहीं है। माया भी कम नहीं है। बहुत ही तुफान में लाती है। माया बिल्ली कहते हैं ना। जितना जो कम याद करते हैं उनको माया प्यकाईगी। वाकीसंग फर्स्ट क्लास भी होती है, थर्ड क्लास भी होती है। यह भी ऐसे ही हैं। जो पुरुषार्थ करते हैं वह सर्विस में लग जाते हैं। सा0 को तो कोई बात ही नहीं। कहा ही जाता है योगबल। सा0 बल नहीं कहा जाता। सभी आत्माओं का बाप एक है उनको याद करने से बल मिलेगा। हम आत्माओं का बाप है ना। भक्ति-मार्ग में बिगर देखे भी याद करते रहते हो। कोई दुःख देता है तो भगवान को पीटते हैं। जलन हो ऐसा हो। बच्चे समझ गये बिल्कुल अंधियारा है। दुनिया में यह कोई भी यह बातें नहीं जानते हैं। कहा जाता है शुभ कार्य में देरी नहीं। मौत सिर पर खड़ा है। बाप को याद करने जैसा शुभ कार्य और कोई नहीं। बाबा घड़ी2 कहते हैं अलफ माना अल्ला। बे है बादशाही। मुसलमान लोग खुदा की बन्दगी करते हैं। परन्तु खुदा को जानते ही नहीं। यह भी भगवान भगवान कहते हैं। जानते भी हैं वह निराकार है ऊंच ते ऊंच। फिर गीता में कह देते हैं कृष्णभगवानुवाच। कृष्ण को ऊंच ते ऊंच थोड़ेही कहेंगे। राधे कृष्ण दोनों हैं जो फिर ल0ना0 गाये जाते हैं। अभी तुम बच्चों को अन्त मिल गया है। कहते हैं ईश्वर बेअन्त है। पहचान नहीं सकते हैं। जिस चीज का अन्त नहीं पाया जाता वह चीज तो होती भी नहीं। जिसका अन्त नहीं पाया जाता है गोया वह चीज है नहीं। अब बाप हद आकर अपना अन्त देते हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चे ही अन्त पाते हो। और कोई पा न सके। खुशी होती है बाप को भी जान लिया सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जान लिया। बाप कहते हैं मैं राजयोग सिखलाता हूं। शास्त्रों में फिर क्या2 लिख दिया है। मेरा अन्त कोई पा नहीं सकते। बेहद के बाप से तुमको बेहद का वर्सा मिलता है। बाप समझाते हैं अभी अजन इतना समझाने का बल नहीं है। बल मिलेगा कैसे? याद की यात्रा से। इसमें ही बहुत फेल होते हैं। पूरी कर्मातीत अवस्था हो जाये आत्मा सतोप्रधान बन जाये तो फिर शरीर भी पवित्र चाहिए। जितना2 तुम पुरुषार्थ करते रहेंगे। तुम समझते हो बराबर हम आत्मा हैं। हमारा बाप परमात्मा है। वह कहते हैं और संग बुद्धि का योग तोड़ मुझ एक साथ जोड़ो। यह डबल की नूंध है।

कलकत्ते का कानफ्रेन्स हुई। वह चाहते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। आठ रोज रहा थे। परन्तु कोई बच्चा ऐसा न निकला जो ठीक समझा सके। बाप की महिमा बतानी चाहिए। शान्ति का सागर तो बाप ही है। विश्व में शान्ति स्थापन करना तो बाप का ही काम है। वह कहते हैं मुझे याद करो। तो तुम विश्व के मालिक बन जाओगे। विश्व में शान्ति अब स्थापन हो रही है। दस मिनट में तो तुम बहुत बता सकते थे। परन्तु ऐसा कोई निकला नहीं। बाबा कहेंगे योगबल नहीं है। देहअभिमान कारण कोई ताकत न रही। अपने देहअभिमान में ही रहे। बाबा कहते रहते हैं दिल्ली को पैराडाइज करो। तो वह समझे यह कैसे विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। परन्तु बल नहीं है तो विजय नहीं पाते हैं। योगबल नहीं है तो कुछ कर नहीं सकते। विश्व में शान्ति लिये ही धक्का मारते रहते हैं। भय तो सभी को है। मुंझे पड़े हैं। तुम जानते हो परन्तु योगबल की ताकत नहीं है। अहंकार ही रहता है। हम बहुतों को ज्ञान देते हैं परन्तु उन से कुछ फायदा नहीं है। योग की ताकत चाहिए। नहीं

तो क्रिमनल आईचल जाती है। यहां तो वह आई नहीं चाहिए। बाप कहते हैं ड्रामा प्लेन अनुसार अभी तो योगबल बहुत चाहिए। क्रिमनल आई निकले तब भाई2 समझे। देह का अहंकार टूट जाये। हम सभी भाई2 हैं। हम बाप को याद कर कर्मातीत अवस्था को पाने पुरुषार्थ कर रहे हैं। हम जानते हो हम भाई2 सबको बाप को याद करेंगे तो तो अन्त मते सो गति हो जावेगी। तुम जानते हो हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। अनेक बार स्थापन किया है। 84 का चक्र बाप ने बताया है। उसमें दैवीगुण भी धारण करनी है। चार्ट के साथ दैवीगुण भी चाहिए। सारे दिन में आसुरी खान-पान तो नहीं किया। मोतीमेल देखना चाहिए। परन्तु माया लिखने नहीं देती है। श्रीमत पर चलते ही नहीं। श्रीमत पर चलेंगे नहीं तो घाटा पड़ जावेगा। लिखना चाहिए। कुछ न कुछ भूलें होती है जरूर। कर्मातीतअवस्था का तो कोई बनानहीं है। कई तो सच्च बोलते ही नहीं। सच्च जैसे कि जानते ही नहीं। यह है ही झूठ खण्ड। सतयुग को कहा जाता है सच्च खण्ड। यहां है आसुरी राज्य। बाप समझाते हैं यह रावण तुम्हारा सबसे पुराना दुश्मन है। बच्चों को खुशी बहुत चाहिए। बाप समझाते हैं सतयुग में तुमको बहुत खुशी थी। सतोप्रधान थे। फिर सन्यासी कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। अपरम अपार दुःख है। कहां है अपरमअपार सुख। परन्तु जब स्थाई याद रहेना। अन्दर में खुशी भी हो। अभी बाबा आया हुआ है। बाप आये हैं स्वर्ग का मालिक बनाने। वहां सुख ही सुख देंगे। तो इतना खुशी में हर्षितमुख रहना चाहिए। बाप समझाते हैं हम स्वर्ग की बादशाही देने आये हैं तो खुशी रहनी चाहिए ना। माया बिल्ली खुशी क्यों उड़ा देती है। माया विघ्न तबपड़ते हैं जब बाप ही याद भूल जाते हैं। बाबा वही ज्ञान देते हैं तुम वही हो जो कल्प2 बरसा लेते हो। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही प्रारब्ध पावेंगे। पुरुषार्थ बिगर कोई रह नहीं सकता। भूखा मरने का भी प्रश्न है ना। कैसे मर पड़ते हैं। यहां तो पुरुषार्थ करना है बाप को याद करने का। यह है हीरे जैसा जन्म। ओम।

→ रात्रिक्लास 3-11-68:- यह तो बच्चे जानते हैं यह है ईश्वरीय परिवार। यहां रूहों की बात है।
***

हैं। लौकिक भी है। जब कोई आफतें आती हैं तो हे भगवान गाड फादर कह याद करते हैं। इनको कहा जाता है अलौकिक बाप। इन द्वारा तुमको वरसा मिलता है बाप बच्चे=से। बाप समझाते हैं लौकिक और पारलौकिक बाप से वरसा मिलता है। यह है रथ। इन द्वारा मैं तुमको विश्व की बादशाही देता हूं। आत्मा स्वर्ग था। सभी सम्पूर्ण निर्विकारी थे। अभी है नर्क। इसमें सभी हैं सम्पूर्ण विकारी। एक भी निर्विकारी नहीं। निर्विकारी होते ही हैं नई दुनिया में। निर्विकारी दुनिया में कोई विकारी हो नहीं सकता। विकारी राज्य में कोई भी निर्विकारी हो न सके। नई दुनिया निर्विकारी फिरपुरानी दुनिया होती है तो विकारी बनते हैं। भारत को कहा जाता है इनकम्पलेट। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। पंचायती राज्य। गीता में कहा है कौरव राज्य। अभी राज्य पाण्डव कौरव दोनों को नहीं है। तुम पण्डे हो सभी को सुखधाम शान्ति का रास्ता बताते हो। स्वर्ग में था इन्हीं का राज्य। सतयुग में जयजयकार होती है अभी है हाहाकार। नेचरल कैलेमिटिज भी होनी है। यह पुरानी दुनिया बाकी आठ वर्ष है। इनका भी तुम हिसाब बताते हो। यहां रहने को जगह नहीं। अनाज भी कम। अपरम्अपार दुःख है। सभी तरफ लड़ते झगड़ते कितनी दुःखी हो पड़े हैं। कितने गन्दे में रहते हैं। बाबा ने कहा था तिथी कितनी दुःखी है। यह दुनिया सुख और दुःख की है, सतयुग में सुख त्रेता में ऐसी सुख, 16कला से 14कला हो जाते हैं। फिर बहुत दुःख के बाप बहुत सुख होते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप ही पढ़ाते हैं। इसलिये यहां तुम आते हो। श्रीमत पर भारत को श्रेष्ठ बनाते हो। पतित भ्रष्ट को कहा जाता। श्रेष्ठ को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्वि० सम्पूर्ण विकारी जो हैं वह उनकी महिमा गाते हैं। अभी मौत सिर पर खड़ा है। झाड़ की तो वृधि होनी ही है। यह राजयोग की पाठशाला है तुम बच्चों को बाप से वरसा मिल रहा है तुम बाप से योग लगाते हो। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को स्प्रीचुअल नालेज दे रहे हैं। आत्मा ही अच्छे वा बुरे कर्म का संस्कार ले जाती है। इन्हीं को देवी देवता कहा जाता है। तुमको तो देवता नहीं कहा जाता। यह है मनुष्य सृष्टि सतयुग में देवी देवताओं की सृष्टि। इसपर से मनुष्य सृष्टि शुरू होती है। सतयुग कहा जाता है सद्गति को, कलियुग कहा जाता है दुर्गति को। यह दुनिया का चक्र है। नई से पुरानी पुरानी से नई बनती है। सभी आत्माएं हैं भाई2=भाई। एक बाप से वरसा मिला है। बेहद का बाप स्वर्ग की बादशाही, हद का बाप नर्क की बादशाही देते हैं। नर्क की बादशाही नहीं कहेंगे। नर्कवासी ही कहेंगे। रावण राज्य में नर्कवासी, रामराज्य में हैं स्वर्गवासी। वह होते ही हैं सतयुग में। यह है पढ़ाई। तुम कहते हो हम मनुष्य से देवता बनने आये हैं। मनुष्य मनुष्य को देवता बना न सके। भगवान का यह है इस वर्ष बाजु में आकर बैठते हैं। वह पुनर्जन्म तो लेते हीनहीं। तुम बच्चे पावन बन रहे हो। बाकी सभी समाप्त हो जायेंगे। और कोई खण्ड होते ही नहीं। फिर वृधि को पाते जाते हैं। इनको कहा जाता है विराटमनुष्यों का झाड़। बाबा कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आकरचित्र झाड़ आदि बनाता हूं। बाप कहते हैं मैं बैठ कैसेट भरता हूं। मेरे=सारे भारत में ऐसा झाड़ किसके पास नहीं होगा। भक्ति को झूठामार्ग ज्ञान को सच्चा मार्ग कहा जाता है। बाप सच्ची कथा सुनाकर तुमको नर से नारायण बनाते हैं। अमर बाप द्वारा सतयुग में तुम जैसे कि अमर बनते हो। काल खाता नहीं। यह है ऊंच ते ऊंच पढ़ाई ऊंच ते ऊंच पद। अभी श्रीमत पर चल तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। पवित्र बन औरों को बनाना है। पुरुषार्थ करेंगे तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे। जितना जो समझदार बन औरों को बनायेंगे उतना ही ऊंच पद पायेंगे। सतयुग में पवित्रता है तो सुख=सुख शान्ति भी है। बाप आधाकल्प से तुमको धक्का बना देते हैं। बाप कहते हैं तुमने सबसे जास्ती मेरी ग्लानी की है। भारत कितना अच्छा था वो कितना हो गया है। सूरत मनुष्य सीरत बन्दर मिसल है। यहां बैठ एक अलफ को याद करना है। अलफ अल्ला। अल्ला की बादशाही सारे हमारी। तुम सभी ब्रदर्स को बाप से हर 5000 वर्ष बाद वरसा मिलता है। यह पढ़ाई है। मैं सोने का कंगन चाहिए जो धारण हो सके। पतित को धारणा नहीं हो सकेगी। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों के रूहानी बाप बदादा का याद प्यार गुड नाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

****